मेन्स मास्टर

एफटीए को उत्साहपूर्ण बाह्य व्यापार के लिए योगदान देने की आवश्यकता है

प्रसंग

• एनडीए सरकार ने 2014 से भारत के बाहरी व्यापार क्षेत्र को बदलने की कोशिश की है, जिसका लक्ष्य निर्यात को दोगुना करना और वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाना है।

• चुनौतियों के बावजूद, भारत के माल और सेवाओं के निर्यात ने 2022-23 में रिकॉर्ड 776 बिलियन डॉलर का आंकड़ा हासिल किया।

पृष्ठभूमि

• पिछले दशक में भारत की निर्यात वृद्धि में बाधा डालने वाले वैश्विक कारकों में शामिल हैं:

- आर्थिक अनिश्चितता एवं संरक्षणवादी प्रवृत्तियाँ
- उच्च वस्तु कीमतें
- कोविड-19 महामारी
- भूराजनीतिक तनाव (जैसे, रूस-यूक्रेन युद्ध, हमास-इज़राइल तनाव)

भारत के व्यापार की वर्तमान स्थिति

• **निर्यात:**

- वैश्विक मांग के अनुरूप उतार-चढ़ाव।
- $314 बिलियन (2013-14) से बढ़कर $451 बिलियन (2022-23) हो गया, औसत वार्षिक वृद्धि 4% से अधिक।
- वैश्विक सामान निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 1.7% (2014) से मामूली बढ़कर 1.8% (2023) हो गई।

• **आयात:**

- निर्यात में तेजी, सालाना 5% से अधिक की दर से $450 बिलियन (2013-14) से $716 बिलियन (2022-23) तक बढ़ रहा है।
- बढ़ते व्यापार घाटे में योगदान दिया, जो 136 बिलियन डॉलर (2013-14) से बढ़कर 265 बिलियन डॉलर (2022-23) तक पहुंच गया।
- तेल और सोने में उच्च मूल्य का आयात प्रमुख घाटे का कारक है।

• **सेवाएँ निर्यात:**

- $167 बिलियन (2013-14) से बढ़कर $322 बिलियन (2022-23) हो गया।
- दूरसंचार, आईटी, परिवहन और यात्रा में मजबूत प्रदर्शन के साथ माल निर्यात की तुलना में थोड़ी तेजी से वृद्धि हुई।

चुनौतियां

• **डब्ल्यूटीओ-संगत निर्यात संवर्धन:** भारत डब्ल्यूटीओ मानदंडों (उदाहरण के लिए, एमईआईएस से आरओडीटीईपी में संक्रमण) के भीतर योजनाओं को डिजाइन करने के लिए संघर्ष करता है।

• **चीन कारक:** बढ़ते आयात के कारण चीन के साथ बढ़ते व्यापार घाटे का प्रबंधन करना।

• **एफटीए उपयोग:** निर्यात को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा एफटीए (जापान, दक्षिण कोरिया, आसियान के साथ) का पूरी तरह से लाभ उठाना एक चुनौती रही है।

नीतियां और सरकारी योजनाएं

• **विदेश व्यापार नीति (एफ़टीपी):** एफ़टीपी 2023 पिछली 5-वर्षीय योजनाओं को खुली समय-सीमा और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों से प्रतिस्थापित करता है:

- 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर का माल निर्यात
- 2030 तक $1 ट्रिलियन सेवाओं का निर्यात

• **मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए):** विकसित देशों और गुटों के साथ नए एफटीए पर जोर:

- हाल के एफटीए: मॉरीशस, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, ईएफटीए
- आगामी: ओमान, यूके (चुनाव के बाद), और महत्वाकांक्षी भारत-ईयू एफटीए

• **उत्पादन से जुड़ा प्रोत्साहन (पीएलआई):** निर्यात वृद्धि का समर्थन करने के लिए घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करें।

• **निर्यात उत्पादों के लिए शुल्कों और करों में छूट (आरओडीटीईपी):** डब्ल्यूटीओ-संगत निर्यात योजना, इनपुट शुल्कों की भरपाई के लिए सावधानीपूर्वक कैलिब्रेट की गई।

गंभीर परीक्षा

• आंतरिक नीति बाधाओं और बाहरी कारकों ने भारत की निर्यात क्षमता को रोक दिया है।

• एफटीए की सफलता की गारंटी नहीं है - घरेलू उद्योग पर प्रभाव और वास्तविक व्यापार लाभों के मूल्यांकन की आवश्यकता है।

आगे बढ़ने का रास्ता

• भारत को चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिदृश्य और भू-राजनीतिक तनाव से निपटने की जरूरत है।

• उत्पाद और बाजार विविधीकरण प्रयासों के साथ-साथ मौजूदा और आगामी एफटीए का रणनीतिक उपयोग महत्वपूर्ण है।

• चीन व्यापार असंतुलन को संबोधित करना एक जटिल लेकिन महत्वपूर्ण कार्य बना हुआ है।

एक समुद्री गढ़

ऐतिहासिक संदर्भ

• **ब्रिटिश काल:**

- दंड उपनिवेश का उद्देश्य: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह केवल निर्वासन का स्थान नहीं था, बल्कि कठोर परिस्थितियों को लागू करने और स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे भारतीय क्रांतिकारियों की भावना को तोड़ने के लिए डिजाइन किया गया था।
- स्थितियाँ: कैदियों को गंभीर अलगाव, बीमारी के प्रकोप और जबरन श्रम का सामना करना पड़ा, जिससे जीवन की महत्वपूर्ण हानि हुई। कुख्यात सेलुलर जेल इस अवधि की एक गंभीर याद दिलाती है।

• **स्वतंत्रता के बाद की भेद्यता:**

- ब्रिटिश इरादे: ब्रिटिश चीफ ऑफ स्टाफ की सिफारिश द्वीपों में देखे गए रणनीतिक मूल्य पर प्रकाश डालती है, जो भारत को स्वतंत्रता प्रदान करते समय भी उन्हें बनाए रखने की इच्छा रखते हैं। विभाजन योजना पर भारत की सहमति के कारण अंततः ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली ने इसे खारिज कर दिया।
- इंडोनेशियाई महत्वाकांक्षाएं: 1965 में इंडोनेशियाई राष्ट्रपति के साथ हुई घटना इस बात को रेखांकित करती है कि अन्य क्षेत्रीय शक्तियां ए एंड एन द्वीपों के मूल्य को पहचानती थीं और मौका मिलने पर अवसरवादी रूप से उन्हें जब्त करने के लिए तैयार थीं।

• **क्रमिक भारतीय समेकन:**

- 1962 की टुकड़ी: 150 नाविकों की प्रारंभिक सेना एक प्रतीकात्मक शुरुआत का प्रतीक है, जो नियंत्रण स्थापित करने के लिए भारत के पहले प्रयासों को दर्शाती है, भले ही उस समय यह कितना ही सीमित क्यों न रहा हो।
- 1976 का किला: यह उन्नयन ए एंड एन के महत्व के बारे में बढ़ती जागरूकता को इंगित करता है - एक छोटी सी टुकड़ी से अधिक मजबूत रक्षात्मक मुद्रा स्थापित करने की ओर बढ़ना।
- 2001 एएनसी: एकीकृत कमांड का निर्माण एक ऐतिहासिक क्षण था। इसने तीनों सेवाओं (सेना, नौसेना, वायु सेना) और तटरक्षक बल को एक कमांड के तहत ला दिया, जिससे पता चला कि भारत अंततः ए एंड एन को ऑपरेशन के एक महत्वपूर्ण थिएटर के रूप में मान रहा था।

सामरिक महत्व

• **जगह:**

- निकटता: म्यांमार, इंडोनेशिया और थाईलैंड की विशिष्ट दूरियां इस बात पर जोर देती हैं कि अंडमान और निकोबार महत्वपूर्ण जलमार्गों और संभावित विरोधियों के चौराहे पर स्थित हैं।
- मलक्का नियंत्रण: मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से शिपिंग की निगरानी (और संभावित रूप से बाधित) करने की क्षमता भारत को इंडो-पैसिफिक में महत्वपूर्ण लाभ देती है। यह चोकपॉइंट वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार के लिए महत्वपूर्ण है।

• **सुरक्षा चिंताएं:**

- विरल जनसंख्या: तथ्य यह है कि इतने कम द्वीप बसे हुए हैं, जिससे पूरे क्षेत्र की शत्रुतापूर्ण ताकतों या गैर-राज्य अभिनेताओं द्वारा घुसपैठ से निगरानी और सुरक्षा करने में एक बड़ी चुनौती पैदा होती है।

भारत का बदलता दृष्टिकोण

• **उपेक्षा से बदलाव:**

- **पिछला दृष्टिकोण:** उपेक्षा की लंबी अवधि स्वतंत्रता के बाद भारत की अंतर्मुखी प्रवृत्ति और महाद्वीपीय सीमाओं पर ध्यान केंद्रित करने को दर्शाती है।
- **परिवर्तन के कारण:** हिंद महासागर में चीन की बढ़ती नौसैनिक शक्ति और महत्वाकांक्षाएं भारत के लिए अपनी समुद्री प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्राथमिक उत्प्रेरक रही हैं।

• **सुरक्षा फोकस:**
  ○ **उन्नत प्लेटफार्म:** इन संपत्तियों के उल्लेख से पता चलता है कि ए एंड एन सिर्फ एक रक्षात्मक चौकी नहीं होगी बल्कि लंबी दूरी की मिसाइलों, उन्नत विमानों और शक्ति प्रक्षेपण के लिए युद्धपोतों को रखने में सक्षम होगी।
  ○ **निगरानी:** अपग्रेड खतरों का शीघ्र पता लगाने के लिए आसपास के समुद्र और हवाई क्षेत्र की लगातार निगरानी पर ध्यान केंद्रित करने का संकेत देता है।
  ○ **सैन्य उपस्थिति:** महत्वपूर्ण संख्या में सैनिकों को भेजना किसी भी जब्ती प्रयास से द्वीपों की रक्षा करने की भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करता है।

• **शक्ति प्रक्षेपण एवं सहयोग:**
  ○ चीन का मुकाबला: PLAN (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी) की गतिविधियाँ क्षेत्र में चीन के मंसूबों और A&N से सीधे पीछे हटने के भारत के संकल्प की पुष्टि करती हैं।
  ○ क्षेत्रीय केंद्र: सहकारी पहलू से पता चलता है कि भारत सिर्फ सैन्य प्रभुत्व की तलाश नहीं कर रहा है, बल्कि ए एंड एन को एक ऐसे स्थान के रूप में देखता है जहां समान विचारधारा वाले देश साझा सुरक्षा चिंताओं पर एक साथ काम कर सकते हैं।

धार्मिक बहुलवाद के लिए उल्लेखनीय समर्थन

प्रसंग
• भारत की धार्मिक बहुलवाद और कई धर्मों के सह-अस्तित्व की दीर्घकालिक परंपरा।
• हाल के सामाजिक-राजनीतिक तनाव और "हिंदू राष्ट्र" की वकालत करने वाली आवाज़ों का उदय भारत के धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के लिए खतरों के बारे में चिंता पैदा करता है।

पृष्ठभूमि
• भारत में धार्मिक बहुलवाद और सहिष्णुता पर जनता की भावना का आकलन करने के लिए एक चुनाव पूर्व सर्वेक्षण आयोजित किया गया था।

सर्वेक्षण के निष्कर्ष
• **बहुलवाद के लिए जबरदस्त समर्थन:** एक महत्वपूर्ण बहुमत (79%) इस विचार का समर्थन करता है कि भारत सभी धर्मों के लिए समान रूप से संबंधित है, मुख्य मूल्य के रूप में धार्मिक सहिष्णुता की ताकत पर जोर देता है।
• बहुसंख्यक दृष्टिकोण धार्मिक सीमाओं से परे है: यह विश्वास लगभग 10 में से 8 हिंदुओं द्वारा साझा किया जाता है, न कि केवल धार्मिक अल्पसंख्यकों द्वारा।
• **युवा और शिक्षित लोगों के बीच मजबूत समर्थन:** बहुलवाद के लिए समर्थन पुरानी जनसांख्यिकी (73%) की तुलना में युवा पीढ़ी (81%) के बीच थोड़ा अधिक है और शिक्षा स्तर के साथ बढ़ता है।
• **शहरी बनाम ग्रामीण विभाजन:** शहरी निवासी ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में धार्मिक बहुलवाद के लिए अधिक समर्थन प्रदर्शित करते हैं।

हाल के ध्रुवीकरण आख्यानों को चुनौती दी गई
• सर्वेक्षण के निष्कर्ष इस गलत धारणा को दूर करते हैं कि राजनीति में तीव्र धार्मिक विभाजन एक समान सामाजिक फ्रेक्चर को दर्शाता है।

भारत के सदियों पुराने बहुलवाद पर प्रकाश डालना
• **सह-अस्तित्व की सदियाँ:** भारत का इतिहास हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म और पारसी धर्म सहित विभिन्न धर्मों के आगमन और एकीकरण से चिह्नित है। लंबे समय से चले आ रहे इस मिश्रण ने धार्मिक प्रथाओं और मान्यताओं की एक समृद्ध श्रृंखला को जन्म दिया है।
• **समन्वयवादी परंपराएँ:** भारत का बहुलवाद केवल धर्मों के सह-अस्तित्व के बारे में नहीं है, बल्कि विचारों और परंपराओं के सक्रिय आदान-प्रदान और मिश्रण के बारे में है। हम इसे इस्लाम और हिंदू धर्म के भीतर सूफी और भक्ति आंदोलनों, साझा धार्मिक स्थलों और यहां तक कि मिश्रित त्योहारों और कलात्मक अभिव्यक्तियों में भी देखते हैं।
• **संवैधानिक सुरक्षा उपाय:** बहुलवाद की यह स्थायी विरासत भारतीय संविधान में निहित है। इसकी धर्मनिरपेक्ष प्रकृति सभी धर्मों के लिए समान अधिकार और सुरक्षा प्रदान करती है, सम्मान और पारस्परिक स्वीकृति के माहौल को बढ़ावा देती है।

भारतीय समाज की अनूठी विशेषता
• **मात्र सहिष्णुता से परे:** भारत का बहुलवाद मॉडल केवल निष्क्रिय सहिष्णुता नहीं बल्कि विविधता का सक्रिय उत्सव दर्शाता है। जबकि कई देश धार्मिक संघर्षों से जूझ रहे हैं, भारत एक जीवित वास्तविकता का प्रदर्शन करता है जहां व्यक्ति एक बड़ी साझा राष्ट्रीय पहचान से संबंधित रहते हुए गर्व से अपनी विशिष्ट धार्मिक पहचान बनाए रख सकते हैं।
• **विविधता में एकता:** 'अनेकता में एकता' का आदर्श वाक्य इस भावना को पूरी तरह से दर्शाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि अनेक क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक मतभेदों के बीच भी एक समान भारतीय पहचान पनप सकती है।
• **चुनौतियाँ और लचीलापन:** निश्चित रूप से, पूरे भारतीय इतिहास में सांप्रदायिक तनाव और हिंसा की घटनाएँ होती रही हैं। फिर भी, बहुलवादी ताने-बाने का लचीलापन उसकी वापसी करने की क्षमता में निहित है, जिसमें अधिकांश आबादी लगातार सहिष्णुता और सह-अस्तित्व के मूल्यों की पुष्टि करती है।

समावेशी बहुलवाद के लिए आगे का रास्ता
• जनता की राय उन पहलों को मजबूत करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है जो अंतर-धार्मिक समझ और संवाद को बढ़ावा देती हैं।
• सांप्रदायिक तनाव के मूल कारणों को संबोधित करना और भारत के लिए एक समावेशी, बहुलवादी भविष्य की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है।

क्या उम्मीदवार के खुलासे में पारदर्शिता की कमी है?

प्रासंगिक अदालती मामलों सहित बुलेट फॉर्म में मुख्य बिंदु यहां दिए गए हैं:

• सुप्रीम कोर्ट ने एक हालिया मामले में फैसला सुनाया कि उम्मीदवारों को चुनावी हलफनामे में हर विवरण का खुलासा करने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि जानकारी पर्याप्त न हो

• उम्मीदवारों द्वारा कथित तौर पर हलफनामे में आय, संपत्ति छुपाने, पारदर्शिता के मुद्दे उठाने पर चिंता (उदाहरण के लिए राजीव चन्द्रशेखर मामला)

• 2019 के लोकसभा चुनाव में लगभग 19% उम्मीदवारों पर बलात्कार, हत्या जैसे गंभीर आपराधिक आरोप लगे

• कुछ उम्मीदवारों ने प्रकटीकरण नियमों से बचने के लिए अधूरे हलफनामे दाखिल किए, कॉलम खाली छोड़ दिए (रिसर्जेंस इंडिया बनाम ईसी मामला, 2013)

• विधि आयोग, ईसी ने सिफारिश की:
  - झूठा हलफनामा दाखिल करने पर सख्त सजा, इसे अयोग्यता का आधार बनाया जाएगा
  - 5 वर्ष से अधिक के अपराध के आरोप वाले उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोकना
  - झूठे शपथ पत्र के मामलों में शीघ्र सुनवाई

• सुप्रीम कोर्ट ने पब्लिक इंटरेस्ट फाउंडेशन बनाम यूनियन ऑफ इंडिया मामले (2018) में उम्मीदवारों, पार्टियों को चुनाव से पहले तीन बार आपराधिक रिकॉर्ड सार्वजनिक करने का निर्देश दिया।

• आरोपपत्रित उम्मीदवारों को वर्जित करने का दुरुपयोग किया जा सकता है, लेकिन अन्य सुधार महत्वपूर्ण हैं:
  - झूठे हलफनामे के लिए सख्त दंड लागू करना
  - आपराधिक रिकॉर्ड का खुलासा करने में पारदर्शिता बढ़ाना
  - बेहतर प्रकटीकरण तंत्र के माध्यम से सूचित मतदाता विकल्पों को सक्षम करना

• सुप्रीम कोर्ट ने एडीआर बनाम भारत संघ मामले (2002) में कहा कि मतदाताओं को उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि, आय, संपत्ति जानने का अधिकार है।

प्रीलिम्स बूस्टर

इसरो का 'शून्य कक्षीय मलबा' मील का पत्थर

🛰️ **इसरो का शून्य कक्षीय मलबा मील का पत्थर:**
इसरो ने PSLV-C58/XPoSat मिशन के बाद पृथ्वी की कक्षा में व्यावहारिक रूप से शून्य मलबा सुनिश्चित करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की, रॉकेट के अंतिम चरण को एक कक्षीय स्टेशन में बदलने और सुरक्षित रूप से हटाने के लिए PSLV ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल -3 (POEM-3) का उपयोग किया। -अंतरिक्ष मलबे के संचय को रोकने के लिए इसकी परिक्रमा करें।
🚀 **POEM-3 का उद्देश्य:**
विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र द्वारा विकसित पीओईएम-3, पीएसएलवी रॉकेट के खर्च किए गए चौथे चरण को वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए एक कक्षीय मंच के रूप में पुन: उपयोग करता है, जो पृथ्वी के वायुमंडल में नियंत्रित पुन: प्रवेश की सुविधा प्रदान करके अंतरिक्ष मलबे को कम करने के प्रयासों में योगदान देता है।
🌌 **अंतरिक्ष मलबे के जोखिम:**
कक्षा में उपग्रहों की बढ़ती संख्या के साथ, अंतरिक्ष मलबा अंतरिक्ष परिसंपत्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है, जिसमें निष्क्रिय उपग्रह, रॉकेट के टुकड़े और उपग्रह-विरोधी परीक्षणों से मलबा शामिल है, जो जिम्मेदार अंतरिक्ष प्रथाओं और मलबे शमन रणनीतियों के महत्व को उजागर करता है।

भारतीय स्टार्ट-अप फंडिंग में पुनरुद्धार देखा जा रहा है, 2024 की पहली तिमाही में वीसी निवेश दोगुना हो गया है

💼 **वेंचर कैपिटल फंडामेंटल:**
वीसी में इक्विटी के लिए स्टार्टअप्स में निवेश करना, उच्च जोखिम, उच्च-इनाम क्षमता के साथ विकास और नवाचार को बढ़ावा देना शामिल है।
🚀 **स्टार्टअप समर्थन:**
वीसी फंडिंग, मेंटरशिप और रणनीतिक सलाह प्रदान करते हैं, महत्वपूर्ण विचारों और विघटनकारी प्रौद्योगिकियों का पोषण करते हैं।
💰 **निवेश रणनीति:**
वीसी अधिग्रहण या आईपीओ निकास के माध्यम से दीर्घकालिक लाभ का लक्ष्य रखते हुए, विभिन्न चरणों में स्टार्टअप को लक्षित करते हैं।
📊 **वैश्विक प्रभाव:**
सिलिकॉन वैली और बेंगलुरु जैसे प्रमुख वीसी केंद्र उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं, एप्पल और गूगल जैसी सफल कंपनियों को बढ़ावा देते हैं।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org